



Vol.6

दिलेर दिव्यांशु

सत्य घटनाओं पर आधारित



शौर्य चक्र



वरीयता क्रम में कीर्ति चक्र के बाद आने वाला शौर्य चक्र वीरता का पदक है। यह सम्मान शांति काल में आतंकवाद विरोधी संचालन और दुश्मन के खिलाफ कार्यवाही के लिए देश के सिपाहियों अथवा गैर सिपाहियों को उनके द्वारा प्रदर्शित अदम्य साहस वीरता व अपने प्राणों तक को न्यौछावर करने के जज्बे के लिए प्रदान किया जाता है। शांतिकाल में यह पदक वीर चक्र के बराबर माना जाता है। इस पदक के साथ मासिक-भत्ता भी प्रदान किया जाता है जो कार्मिक की सेवानिवृत्ति के बाद भी जारी रहता है तथा कार्मिक की मृत्युपरांत उसके आश्रित को भी दिया जाता है। लगातार दूसरी बार यह पदक बार-एक और इसी क्रम में पुलिस पदक बार-दो और आगे इसी क्रमिक रूप से जारी रहता है।

वीरता का पुलिस पदक



वरीयता क्रम में वीरता के लिए राष्ट्रपति के पुलिस पदक के बाद आने वाला वीरता का पुलिस पदक देश की आंतरिक सुरक्षा, देश हित और देश की रक्षा के लिए अपने प्राण तक न्यौछावर कर देने वाले वीर पुलिस कर्मियों को प्रदान किया जाता है। इस पदक के साथ एक मासिक-भत्ता भी प्रदान किया जाता है जो कार्मिक की सेवानिवृत्ति के बाद भी जारी रहता है तथा कार्मिक की मृत्युपरांत उसके आश्रित को भी दिया जाता है। लगातार दूसरी बार यह पदक बार-एक और इसी क्रम में पुलिस पदक बार-दो और आगे इसी क्रमिक रूप से जारी रहता है।



दिलेर दिव्यांशु



प्रस्तुति: संजय गुप्ता
लेखन: नितिन मिश्रा
चित्रांकन: हेमंत कुमार
स्याहीकार: विनोद कुमार, स्वाति चौधरी
आवरण: हेमंत कुमार एवं ईशान त्रिवेदी
रंग सज्जा: सुनील दस्तुरिया, शादाब
शब्दांकन: मंदार गंगेले
संपादन: मनीष गुप्ता

Published By: Raj Comics (an imprint of Raja Pocket Books) on behalf of Directorate General C.R.P.F.

 **Raj Comics**
330/1, Burari
Delhi-110084
www.rajcomics.com
Ph. 01127611410

Copyright © 2016 Central Reserve Police Force

Printed By: Prince Print Process

All rights reserved. No part of this publication may be reproduced, distributed or transmitted in any form or by any means, including photocopy, recording or other electronic or mechanical methods, without the prior written permission of the publisher- For permission requests write to the publisher addressed “Attention: Permissions Coordinator” at the address below.

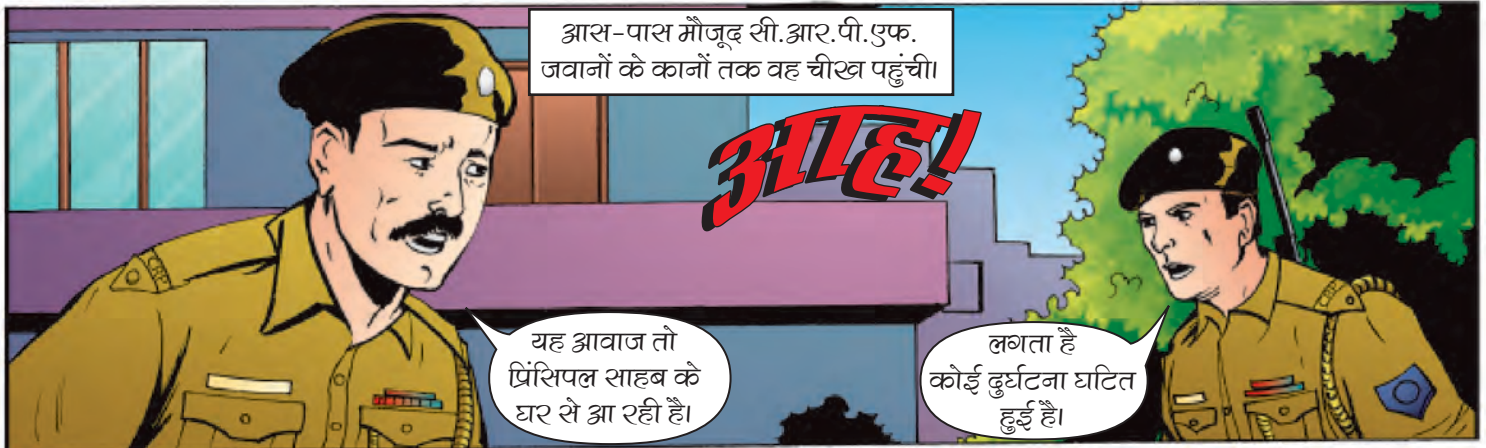
Inspector General (Operations)
Central Reserve Police Force
Email: igops@crpf.gov.in



श्री लक्ष्मण प्रसाद यादव केन्द्रीय विद्यालय में प्रधानाचार्य थे और लांगझिग, इम्फाल(मणिपुर) के सी.आर.पी.एफ. ग्रुप सेक्टर पर कार्यरत थे। वे अपनी पत्नी व दो पुत्रों अजय विभांशु व उदय दिव्यांशु के साथ रहते थे।



एक दिन जब घर पर उनकी पत्नी के अलावा कोई नहीं था तब उनकी पत्नी तीव्र विद्युत आघात का शिकार हो गई।



आस-पास मौजूद सी.आर.पी.एफ. जवानों के कानों तक वह चीख पहुंची।

आह!

यह आवाज तो प्रिंसिपल साहब के घर से आ रही है।

लगता है कोई दुर्घटना घटित हुई है।



तत्पर जवानों ने फौरन ही घर का दरवाजा तोड़ डाला।

यह तो बेहोश हो गई हैं।

इन्हें फौरन हॉस्पिटल पहुंचाना होगा।

क्योंकि विद्युत आघात बहुत ही तीव्र था इसलिए चढ़ाने हेतु खून की आवश्यकता फौरन उत्पन्न हुई।

इन्हें बचाने के लिए खून चढ़ाना अत्यंत आवश्यक है।

इतनी जल्दी रक्त का प्रबंध कैसे होगा, यहां आस-पास तो कोई ब्लड बैंक भी नहीं है।

मम्मी!
(सुबुक-सुबुक)!

ब्लड बैंक है प्रधानाचार्य जी। आपके सामने ही खड़े हैं ब्लड बैंक।

हमारा कर्तव्य सिर्फ देश के दुश्मनों से देश की रक्षा करना ही नहीं है, बल्कि देश के हर आम-नागरिक की सुरक्षा करना भी है प्रधानाचार्य जी।

अ..आप लोग।

आपने तो हमारे बच्चों को शिक्षित करके हमें ऐसे ही अपना ऋणी बनाया है। शिक्षक का दर्जा तो भगवान् से भी ऊपर होता है।

इस घटना ने श्री एल.पी. यादव और उनके परिवार पर अमिट छाप छोड़ी, परन्तु जवानों के उस जज्बे ने सबसे अधिक प्रभावित किया मास्टर जी के दोनों पुत्रों अजय विभांशु व उदय दिव्यांशु को। उस दिन से उनके मन में सी.आर.पी.एफ. के प्रति आदर व प्रेम उत्पन्न हुआ।

अपनी शिक्षा संपन्न करके सन् 1998 में श्री उदय दिव्यांशु ने सी.आर.पी.एफ. ज्वाइन की।



प्रशिक्षण पश्चात वे आसाम, झारखण्ड जैसे विभिन्न क्षेत्रों में तैनात रहे तथा विभिन्न अभियानों का संचालन कर उन्होंने काफी कामयाबी हासिल की। उनकी उपलब्धियां देख सन् 2009 में श्री दिव्यांशु को सी.आर.पी.एफ. की कोबरा यूनिट यानी कमांडो बटालियन फॉर रेजोल्यूट एक्शन में शामिल किया गया।



उसके बाद से अपनी दिलेरी, सूझबूझ और तत्परता से श्री दिव्यांशु ने अनगिनत अभियानों का नेतृत्व किया और दुर्दांत माओवादियों का खात्मा किया।

इस घटना के समय श्री दिव्यांशु की तैनाती उप कमाण्डेंट के रूप में पश्चिम बंगाल के मिदनापुर डिस्ट्रिक्ट में थी। यह क्षेत्र दुर्दांत माओवादियों से बुरी तरह प्रभावित था।



श्री उदय दिव्यांशु और उनकी टीम को यह खुफिया जानकारी प्राप्त हुई कि मिदनापुर से लगभग 70 किलोमीटर दूर मिदनापुर-लालगढ़ क्षेत्र में पड़ने वाले घने बीहड़ जंगलों में माओवादियों का ट्रेनिंग कैंप चलाया जा रहा है।

श्री दिव्यांशु ने अपनी टीम के साथ मिलकर प्लान ऑफ एक्शन तैयार किया।



प्राप्त जानकारी के अनुसार मिदनापुर के समीप के जंगलों में माओवादी अपना ट्रेनिंग कैंप चला रहे हैं। इनकी संख्या सौ के करीब होने की संभावना है।

कठोर कार्यवाही का समय आ गया है कोबरा जवानों। क्या आप सभी तैयार हैं?

यस सर!!

दिनांक 15 जून 2010, रात्री 11 बजे

ऑपरेशन एरिया तक पहुंचने के लिए श्री दिव्यांशु और उनकी टीम ने पब्लिक ट्रांसपोर्ट का प्रयोग किया।

गंतव्य तक पहुंचने के लिए हम पब्लिक ट्रांसपोर्ट का प्रयोग करेंगे।



क्योंकि सी.आर.पी.एफ. वाहनों का प्रयोग करके जंगल तक पहुंचने में हम उनकी निगाह में आ सकते हैं। ये ट्रक वाले प्रतिदिन उन रास्तों से गुजरते हैं, हम इनके ट्रकों पर सवार होकर जाएंगे तो माओवादियों को कतई खबर नहीं लगेगी।

दिनांक 16 जून 2010, प्रातः 4:30 बजे

ऑपरेशन एरिया के निकट पहुंच कर श्री दिव्यांशु और उनकी टीम ने ट्रकों को छोड़ दिया।

यहां से आगे हम मार्च करेंगे।



यहां से हम दो टीमों में बंट कर आगे बढ़ेंगे, टीम ए को मैं लीड करूंगा।



श्री उदय दिव्यांशु ने पिछले आठ सालों में
अनगिनत दुष्कर ऑपरेशन किए थे।

उनकी पिछली उपलब्धियों को देखते हुए ही उनकी तैनाती
उद्दिष्टा से पश्चिम बंगाल के मिदनापुर क्षेत्र में की गई थी
जोकि उस समय माओवाद से बुरी तरह प्रभावित क्षेत्र था।

दिव्यांशु की बाज सी पैनी नजर किसी भी खतरे
की हल्की सी आहट के लिए चौकन्नी थी।

कोबरा टीम बेआवाज, बिना किसी आहट के
उस दुर्गम बीहड़ की कॉम्बिंग कर रही थी।

सी.आर.पी.एफ. की कोबरा यूनिट जिसे ऐसी ही विषम
परिस्थितियों में जटिलतम ऑपरेशन्स को अंजाम देने का कठोर
प्रशिक्षण दिया गया है, श्री दिव्यांशु के कुशल नेतृत्व में किसी
बेआवाज चीते की भांति अपने शिकार की ओर बढ़ रही थी।

बीहड़ जंगल में लगभग चार किलोमीटर भीतर जाने के बाद।

टीम हॉल्ट!!
घात लगाओ।





दिव्यांशु और उनकी टीम भी फौरन हरकत में आई।

दुश्मन को हमारी उपस्थिति का पता लग गया है, टेक कवर एंड फायर।



अत्याधुनिक स्वचालित हथियारों और देसी हथियारों का प्रयोग कर रहे थे माओवादी।

AK47 और SLR के कारण ये काफी ज्यादा फायर कर रहे हैं।

इनकी अंधाधुंध फायरिंग हमारे लिए घातक हो सकती है, हमें माइक्रो टीमों में स्प्लिट करना होगा।



श्री दिव्यांशु के निर्देश पर जवान दो-दो की टुकड़ियों में बंट गए।

ये लोग चारों ओर से फायर कर रहे हैं, विभाजित होकर आइ लो। चारों निकासी पॉइंट्स को कवर करते हुए फायरिंग करो।



कोबरा जवानों ने श्री दुश्मन को मुंह तोड़ जवाब देना शुरू किया।



माओवादी आई.ई.डी.
विस्फोटकों का प्रयोग
कर रहे हैं।



माओवादियों के होंसले
बुलंद हो रहे थे।

माओवाद
जिंदाबाद!

भारत सरकार
निपट जाक!

जोउथा
बाहिनी के
मारो।



भारत माता
की जय!!

भारत माता
की जय!!

देह में जब तक
है जान, दुश्मन पर
भारी है जवान!!

लेकिन श्री दिव्यांशु और उनकी टीम के भी
होंसले कम नहीं थे। अदम्य साहस और दृढ़
संकल्प का प्रदर्शन करते हुए दिव्यांशु और
उनकी टीम आड से बाहर निकलते हुए
माओवादियों पर चौतरफा हमला करने लगी।

माओवादियों को जवानों से इस साहसिक और हाहाकारी कदम की अपेक्षा नहीं थी।

बाकी हिस्सों से छोटे दल भी वायरलेस पर श्री दिव्यांशु के निर्देश पाकर वहां पहुंच चुके थे।

रेट
रेट
रेट
रेट

अब सभी दल चारों निकास पॉइंट्स को घेर कर माओवादियों पर चारों ओर से फायर कर रहे थे।

इस चौतरफा ताबड़तोड़ फायरिंग ने माओवादियों के पैर उखाड़ दिए।



कोबरा जवानों के बुलंद हौसले और अदम्य साहस का मुकाबला भला कायर माओवादी कहां कर सकते थे।



चारों ओर से ताबड़तोड़ बरसती मौत ने उन्हें भागने पर मजबूर कर दिया।

माओवादियों ने बिखर कर भागने की नीति अपनाई।

भाड़ में गया माओवाद,
जान प्यारी है तो दुम दबा
कर भाग।

मौत के दूत हैं
ये सी.आर.पी.एफ.
वाले तो!!

भागो वर्ना
कोई जिंदा नहीं
बचेगा।

श्री दिव्यांशु और उनकी टीम की लगभग छः घंटे की मेहनत और दिलेरी रंग लाई थी। कायर माओवादी अपनी जान बचाकर भाग रहे थे।

भागते हुए श्री वो बीच-बीच में आई.ई.डी. के विस्फोट कर रहे थे।

विस्फोट करो!!

ये विस्फोट सी.आर.पी.एफ. वालों को हमारे पीछे आने से रोकेंगे।

बूम

सावधानीपूर्वक आगे बढ़ो। इन लोगों ने जगह-जगह आई.ई.डी. माइन्स बिछाई हुई हैं।

बड़ा बूम

लेकिन देशभक्ति के जज्बे की हुंकार उन धमाकों की गूंज पर भारी थी।

रेट रेट रेट रेट

ना वे देश के सच्चे सपूत थामे, ना ही थामे उनके हथियारों से गरजते मौत के शोलो।

अमन के दुश्मन आखिर कब तक खैर मनाते।

आह!

देश के प्रति दुर्भाव रखने वाले, भारत माता को नेस्तनाबूत कर देने की बड़ी-बड़ी बातें करने वाले कायर शीढ़ों की तरह भागते हुए मारे जा रहे थे।







यकायक ही श्री दिव्यांशु को बचपन की उस घटना का स्मरण हो आया जिसने उनके हृदय पर अमिट छाप छोड़ी थी और उन्हें सी.आर.पी.एफ. ज्वाइन करने के लिए प्रेरित किया था।



हमारा कर्तव्य सिर्फ देश के दुश्मनों से देश की रक्षा करना ही नहीं है, बल्कि देश के हर आम-नागरिक की सुरक्षा करना भी है प्रधानाचार्य जी।



फिक्र मत करो, हम लोग तुम्हें नहीं मारेंगे। एक सच्चे सिपाही में और एक कायर में यही फर्क होता है, सच्चे सिपाही कभी भी किसी घायल और निहत्थे पर वार नहीं करते।

श्री दिव्यांशु के उत्तर ने उस घायल माओवादी को भी अवाक कर दिया।



श्री दिव्यांशु के निर्देश पर सी.आर.पी.एफ. जवानों ने मृतकों के शवों और पकड़े गए घायल माओवादी को जिला अस्पताल पहुंचाने का प्रबंध किया।

श्री दिव्यांशु और उनकी टीम के अदम्य साहस और अद्वितीय पराक्रम के परिणाम स्वरूप यह मिशन संपन्न हुआ, घटनास्थल से भारी मात्रा में असलहा व गोला-बारूद बरामद किया गया।



25 जुलाई 2010

सन् 2010, पश्चिम बंगाल के मेताला के घने बीहड़ में माओवादियों का एरिया कमांडर सिधु सोरेन आस-पास के क्षेत्रों के सभी माओवादियों को एकत्रित कर रहा था।



पिछले कुछ दिनों में सी.आर.पी.एफ. ने हमारे दल और हमारे मकसद को काफी क्षति पहुंचाई है।



सोरेन के इरादे बेहद खतरनाक थे।

खास कर 'कोबरा' टीम के डिप्युटी कमाण्डेंट उदय दिव्यांशु ने।

जब से दिव्यांशु इस क्षेत्र में कोबरा डिप्युटी कमाण्डेंट बन कर आया है तबसे हमारे अनगिनत साथियों का एनकाउंटर कर चुका है। उसके आने से ना सिर्फ सी.आर.पी. एफ. वालों का मनोबल बढ़ गया है बल्कि आस-पास के गांववाले जो हमारे डर से नजरें उठाने से भी डरते थे, उनके भी हौसले बुलंद हो रहे हैं।



इनके बुलंद होते इरादों को तोड़ना होगा और इरादों को तोड़ने के लिए उस जरिए को ही खत्म करना होगा जोकि इन इरादों को बुलंदी दे रहा है।

सी.आर.पी.एफ. को खत्म करना होगा। गोलतोरे से सी.आर.पी.एफ. वालों की लाशें ही वापस जाएंगी।

इससे इस पूरे क्षेत्र के गांव वालों को भलीभांति यह सबक मिल जाएगा कि माओवाद का विरोध करने पर उनका भी यही हथ्र हो सकता है।



क्या तुम सभी मेरे साथ हो?

हां हम साथ हैं।



सी.आर.पी.एफ. के जवानों के सिर हर गांव के चौराहे पर लटकाएंगे हम।

माओवादी अपने लीडर सिधु सोरेन के नेतृत्व में सी.आर.पी.एफ. पर हमले की बड़ी योजना बना रहे थे।



लेकिन इसकी भनक सी.आर.पी.एफ. की कोबरा यूनिट 202 के डेप्युटी कमांडेंट श्री उदय दिव्यांशु को लग चुकी थी।



रात्री साढ़े दस बजे के करीब श्री उदय दिव्यांशु जी के नेतृत्व में सी.आर.पी.एफ. की कोबरा 202 यूनिट वेस्ट बंगाल स्टेट पुलिस के साथ कॉम्बिंड के उद्देश्य से मेताला के जंगलों में पहुंची।



गोलतोटे डिस्ट्रीक्ट, मेताला के जंगलों में 25 जुलाई रात्री 10:30 बजे।

हम सभी तीन
गुप्स में बंट कर
आगे बढ़ेंगे। गुप ए,
बी और सी।

अपनी सिर्फ नजरें
और कान ही नहीं दिमाग
भी चौकन्ना रखना साधियों।
मेताला के यह बीहड़ घने
जंगल माओवादियों का घर
है। यहां के हर कदम, हर
चप्पे पर माइंस बिछी
हो सकती हैं।

यहां के हर पत्ते,
हर डाल के पीछे कोई चोर
फंदा हमारी घात में लगाया
गया हो सकता है।



याद रखना साधियों,
हम में से किसी की एक छोटी सी
गलती भी हमारे इस पूरे मिशन
को फेल कर सकती है।

इज दैट
क्लियर?

यस सर!!





कम ऑन साथियों,
दिखा दो इन इंसानियत के दुश्मनों
को कि सी.आर.पी.एफ. वाले जब मारने
पर आते हैं तो दुश्मन को उसके घर में
घुस कर मारते हैं।



श्री उदय दिव्यांशु सन 2009 से सी.आर.पी.एफ.
के कोबरा यूनिट यानी **COMMANDO BATTALION
FOR RESOLUTE ACTION** का हिस्सा रहे हैं।



अपनी तत्परता, सूझबूझ और देशभक्ति के जज्बे व
जबरदस्त इच्छाशक्ति के कारण श्री उदय दिव्यांशु हर
जगह माओवादियों के लिए भय का परिचायक बन गए थे।



अपने जांबाज जवानों का नेतृत्व करते हुए श्री दिव्यांशु
मेताला के बीहड़ों में माओवादी लीडर सिधु सोरेन और
उसके साथियों को तलाश रहे थे। इस काम के लिए वे
जी.पी.एस. उपकरणों का प्रयोग कर रहे थे।

यह एक बहुत ही धीमी और जटिलताओं
से भरी हुई प्रक्रिया थी।



क्योंकि यह ऑपरेशन रात्री में किया जा रहा था इसलिए बीहड़ जंगल की दुश्वारियां जवानों के लिए दोगुनी हो गई थीं।

हम जंगल के भीतर लगभग सात किलोमीटर तक बढ़ चुके हैं, बाकी दोनों ग्रुप्स से जी.पी.एस द्वारा संपर्क बनाए रखो।



परन्तु सी.आर.पी.एफ. के जवानों को वर्षों तक इन्हीं विषमताओं का सामना करके अपने शत्रु तक पहुंचने का प्रशिक्षण दिया गया है।



पूरी रात सी.आर.पी.एफ. कोबरा यूनिट के जवान जीरो विजिबिलिटी में उस खतरनाक बीहड़ की खाक छानते रहे।

अपने कदम इतने आहिस्ता रखो कि पदचार्पों की ध्वनि ना हो और कानों को पत्तों की सरसराहट के लिए भी चौकन्ना रखो।



26 जुलाई प्रातः 4:00 बजे

अगले दिन भोर में प्रातः चार बजे के करीब ग्रुप सी, जिसका नेतृत्व सहायक कमाण्डेंट श्री पंचम लाल कर रहे थे माओवादियों के गुप्त ठिकाने तक पहुंच गया।

सावधान साधियों।

श्री पंचम लाल ने तुरंत ही माओवादियों के इस अस्थायी कैंप की जानकारी वायरलेस द्वारा टीम लीडर श्री उदय दिव्यांशु जी को दी।



जनाब! हमारे ठीक सामने दुश्मन का अस्थायी कैंप समूह नजर आ रहा है जिसके सामने एक सशस्त्र पहरेदार तैनात है।

फिलहाल कोई अन्य एक्टिविटी नजर नहीं आ रही पर हमारा अनुमान है कि भीतर और सशस्त्र नक्सली मौजूद हैं।



अपने साथी जवानों के साथ सावधानीपूर्वक आगे बढ़िए पंचम लाल और शत्रु को कुछ सोचने या संभालने का मौका दिए बगैर उस पर धावा बोल दीजिए।

मैं बाकी जवानों के साथ जी.पी.एस. से आपकी पोजीशन ट्रैक करके आप तक पहुंचता हूँ, हमें दुश्मन के भागने के रास्ते सील करने होंगे।



हम तीन अलग एसॉल्ट टीम में बंट कर दुश्मन कैंप पर तीन तरफ से घात लगाएंगे। कंटिली झाड़ियों की आड़ लेते हुए आगे बढ़ो।

श्री पंचम लाल के नेतृत्व में उप निरीक्षक मंगला प्रसाद सिंह, सिपाही आशीष कुमार तिवारी, सिपाही आनंद कुमार तिवारी, व शुभ सी के अन्य जवान बेहद सावधानीपूर्वक कैंप समूह की ओर बढ़े।

परन्तु माओवादियों को कोबरा टीम के आने की भनक मिल गई। अगले ही पल माओवादियों ने भीषण गोलीबारी पंचम लाल और उनकी टीम पर शुरू कर दी।



कोबरा यूनिट!!

यहां आकर इन लोगों ने हमारा ही काम आसान कर दिया है। ये लोग यहां तक आ तो गए हैं पर यहां से जिंदा वापस नहीं जाएंगे।

श्री पंचम लाल, आशीष कुमार तिवारी, लाल बहादुर और एस. वाई. रेडी की एसॉल्ट टीम सामने से फायरिंग का मुंह तोड़ जवाब देते हुए दुश्मन कैम्प की ओर बढ़ी।

एस.एल.आर. और ए.के. 47 की वजह से इनकी फायरिंग का दायरा काफी बड़ा है, आड़ लेकर ही आगे बढ़ो साथियों।



उप निरीक्षक मंगला प्रसाद सिंह और सिपाही श्री कृष्ण की एसॉल्ट टीम बगल से कैम्प समूह पर फायरिंग करते हुए आगे बढ़ रही थी।



हवलदार धरमपाल, अरुण कुमार पांडे और सिविल पुलिस प्रतिनिधि चन्द्र शेखर की एसॉल्ट टीम तीन माओवादियों के छुपने की जगह को निशाना बना रही थी।





ग्रुप सी की इन तीनों माइक्रो एसॉल्ट टीमस ने हैवी फायरिंग से एक दूसरे को कवर देकर तीन तरफ से कैम्प समूह की और बढ़ना और उन्हें घेरना शुरू किया।

सबसे पहले एसॉल्ट टीम धी को फायरिंग कवर दो, उन्हें एडवांस करने दो।



टीम आगे बढ़!!

इनके द्वारा की जा रही इतनी भीषण फायरिंग दर्शाती है कि अवश्य ही कोई अतिमहत्वपूर्ण माओवादी लीडर इन कैम्प के भीतर मौजूद है।

एक-एक करके तीनों माइक्रो एसॉल्ट टीमस माओवादियों के छुपने के स्थान की ओर बढ़ रही थीं जबकि बाकी दोनों टीमस अगली टीमस को फायरिंग से आड़ दे रही थीं।



सिधु सोरेन भी कैम्प से बाहर आ चुका था।

रेट रेट रेट

इनकी मौत इन्हें यहां खींच लाई है! छलनी कर दो इन्हें साथियों।



सिधु सोरेन!! यह तो माओइस्ट लीडर सिधु सोरेन है, यानी जो खुफिया इनफार्मेशन हमें मिली थी वह सौ फीसदी सही थी।

हमें किसी भी हाल में इसे बच कर भागने नहीं देना है साथियों। हमें आड़ छोड़नी होगी।



अपनी जान की परवाह ना करते हुए और अदम्य साहस का प्रदर्शन करते हुए देश के उन रणबांकुरों ने कवर से बाहर निकल कर माओवादियों पर सीधा हल्ला-बोल दिया।



जब सी.आर.पी.एफ के जांबाज जवान अपनी जान हथेली पर रखकर कर्तव्यपथ पर निकलते हैं तब भला कौन सा दुश्मन ऐसा है जिसका कलेजा भय से सिहर नहीं उठता।



खुद को मौत का सौदागर समझने वाले सिधु सोरेन को भी मौत ने नहीं बचशा।



सी.आर.पी.एफ. को खाक करने के मंसूबे लेकर आया वो शैतान खुद सी.आर.पी.एफ. के जांबाज जवानों द्वारा खाक में मिला दिया गया।

अपने कमांडर का वह हौलनाक हश्र देखकर अन्य माओवादियों के हौसले परत हो गए। दूसरों की मौत को खेल समझने वाले खुद मौत को अपने सामने देख कर गीदड़ों की तरह भागने की जगह तलाशने लगे।



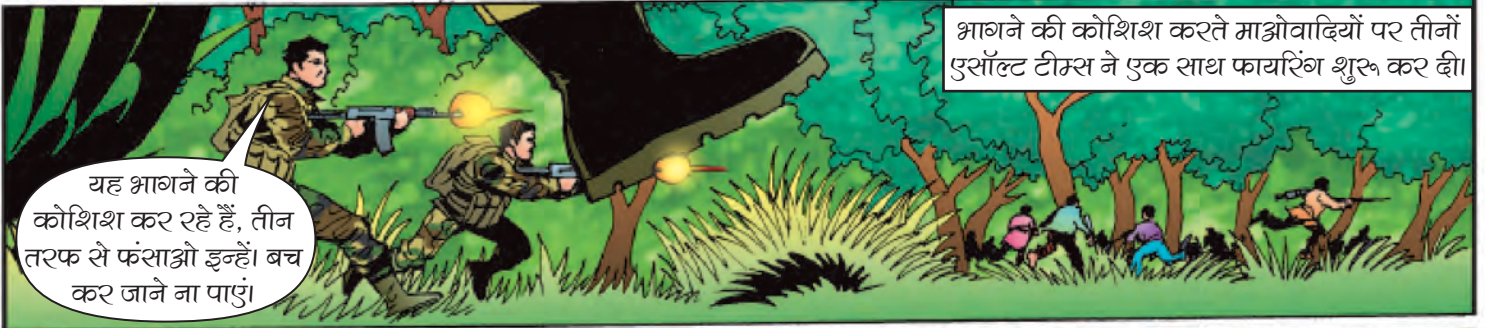
कमांडर मारा गया।

ये सी.आर.पी.एफ. वाले किसी को नहीं छोड़ते, जब कमांडर इनका सामना ना कर सका तो हम क्या खाक करेंगे।

जान बचाओ और निकल कर भागो यहां से।

यह भागने की कोशिश कर रहे हैं, तीन तरफ से फंसाओ इन्हें। बच कर जाने ना पाएं।

भागने की कोशिश करते माओवादियों पर तीनों एंटी टैक्स ने एक साथ फायरिंग शुरू कर दी।



पलायित होते माओवादियों पर फायरिंग करते हुए श्री आशीष कुमार तिवारी बिना अपनी जान की परवाह करते हुए, बिना किसी आहूत के फायरिंग करते हुए माओवादियों का पीछा कर रहे थे।



भागते हुए माओवादियों की एक गोली श्री
आशीष कुमार तिवारी को घायल कर गई।



अपने परम मित्र को घायल होते देख
दिल दहल उठा श्री पंचम लाल का।



गंभीर रूप से घायल आशीष कुमार तिवारी के लिए उस विषम
परिस्थिति में भी अपने कर्तव्य का महत्त्व अपनी जान से बढ़कर
था। आशीष ने भागते हुए एक माओइस्ट को ढेर कर दिया।

ग्रुप बी ने श्री माओवादियों के कैम्प एरिया तक पहुंच कर फायरिंग शुरू कर दी जिसमें एक और माओइस्ट मारा गया।



श्री पंचम लाल ने आशीष कुमार तिवारी के गंभीर रूप से घायल होने और माओवादियों के भागने की जानकारी श्री दिव्यांशु जी को दी।

जिस ओर यह माओवादी भाग रहे हैं हम उसके सामने से आगे बढ़ते हुए इन्हें इंटरसेप्ट करेंगे। ओवर एंड आउट।



श्री दिव्यांशु जल्दी ही माओवादियों के सामने पहुंच गए! उनकी फायरिंग ने एक माओवादी को ढेर कर दिया!



श्री दिव्यांशु और उनकी टीम ने भारी मात्रा में हथियार व गोला-बारूद इन माओवादियों से जब्त किया। इस पूरे ऑपरेशन में खतरनाक माओइस्ट लीडर सिधु सोरेन समेत छः माओवादियों को कोबरा यूनिट ने मार गिराया।





अलंकरण

पश्चिम बंगाल के मिदनापुर जिले के गोलतोरे कायमा-मेताला जंगलों में माओवादियों के दल के विरुद्ध सी.आर.पी.एफ. के जवानों द्वारा अतुल्य साहस और वीरता के प्रदर्शन हेतु निम्न जवानों को शौर्य चक्र एवं पुलिस पदक से अलंकृत किया गया!

शौर्य चक्र से सम्मानित



स्वर्गीय सिपाही श्री आशीष कुमार तिवारी

पुलिस पदक से सम्मानित



श्री उदय दिव्यांशु

तत्कालीन रैंक : उप कमाण्डेंट, वर्तमान रैंक: द्वितीय कमाण्ड अधिकारी



श्री पंचम लाल

तत्कालीन रैंक : सहायक कमाण्डेंट, वर्तमान रैंक: उप कमाण्डेंट



श्री आनंद प्रसाद गोटवाल

तत्कालीन रैंक : सहायक कमाण्डेंट, वर्तमान रैंक: उप कमाण्डेंट



श्री मंगला प्रसाद

तत्कालीन रैंक : उप निरीक्षक, वर्तमान रैंक: सहायक कमाण्डेंट



श्री कृष्णा

तत्कालीन रैंक : सिपाही, वर्तमान रैंक: सिपाही ।



श्री एस वाय रेड्डी

तत्कालीन रैंक : सिपाही, वर्तमान रैंक: सिपाही ।



श्री लाल बहादुर

तत्कालीन रैंक : सिपाही, वर्तमान रैंक: सिपाही



श्री अरुण कुमार पाण्डेय

तत्कालीन रैंक : सिपाही, वर्तमान रैंक: सिपाही ।

अलंकरण

पश्चिम बंगाल के मिदनापुर जिले के दुली जंगलों में माओवादियों के दल के विरुद्ध सी.आर.पी.एफ. के जवानों द्वारा अतुल्य साहस और वीरता के प्रदर्शन हेतु निम्न जवानों को पुलिस पदक से अलंकृत किया गया!

पुलिस पदक से सम्मानित



श्री उदय दिव्यांशु (पुलिस पदक बार एक)

तत्कालीन रैंक : उप कमाण्डेंट, वर्तमान रैंक: द्वितीय कमाण्ड अधिकारी



श्री राजन रौशन टिकी

तत्कालीन रैंक : सहायक कमाण्डेंट, वर्तमान रैंक: सेवानिवृत्त



श्री विनोद सावंत

तत्कालीन रैंक : सहायक कमाण्डेंट, वर्तमान रैंक: उप कमाण्डेंट



श्री एम. कैलाशम

तत्कालीन रैंक : उप निरीक्षक, वर्तमान रैंक: उप निरीक्षक



श्री यू. रामाराव

तत्कालीन रैंक : सिपाही, वर्तमान रैंक: सिपाही



श्री प्रताप पौल

तत्कालीन रैंक : सिपाही, वर्तमान रैंक: सिपाही



श्री पिंगाले कल्पेश संपत

तत्कालीन रैंक : सिपाही, वर्तमान रैंक: सिपाही

अलंकरण

वर्तमान में केंद्रिय रिजर्व पुलिस बल के द्वितीय कमान अधिकारी, श्री उदय दिव्यांशु जी ने देश की सेवा करते हुए अब तक के अपने कार्य काल में अनेकों ऑपरेशनों को सफलतापूर्वक अंजाम दिया, उनके इसी अदम्य साहस व वीरतापूर्ण नेतृत्व के लिए उन्हें दो बार पुलिस पदकों से अलंकृत किया गया।



केंद्रिय राज्य मंत्री श्री जितेन्द्र सिंह, श्री उदय दिव्यांशु, उप कमाण्डेंट को पुलिस पदक से अलंकृत करते हुए।



अलंकरण
शहीद सिपाही श्री आशीष तिवारी (शौर्य चक्र)



पश्चिम बंगाल के मिदनापुर जिले के गोलतोरे कायमा-मेताला जंगलों में माओवादियों के दल के विरुद्ध अतुल्य साहस और वीरता के प्रदर्शन करते हुए श्री आशीष तिवारी वीरगति को प्राप्त हुए। उन्हें मरणोपरांत शौर्य चक्र से अलंकृत किया गया।





सरदार पोस्ट एक शौर्य गाथा ।

9 अप्रैल को गुजरात के रण ऑफ कच्छ में वीरता साहस और रण कौशल की एक अद्वितीय मिसाल रची गई जब केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल की एक छोटी सी टुकड़ी ने एक पूरी पाकिस्तानी ब्रिगेड को न केवल धूल चटा दी बल्कि उसे पराजित कर पीछे लौटने पर मजबूर कर दिया। दुनिया के युद्ध इतिहासों में दर्ज एक अनूठी शौर्य गाथा।



वीर भृगुनंदन

यह केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के प्रथम कीर्ति चक्र प्राप्त करने वाले अमर शहीद भृगुनंदन चौधरी की वीरता, साहस, बलिदान और मित्र भाव की पराकाष्ठा की कहानी है। यह कहानी है उस जवान की जो बारूदी सुरंग में अपनी दोनों टांगें गंवा देने के बावजूद माओवादियों का सामना करता रहा। यह वह स्थिति थी जब माओवादियों के हमले में उसका पूरा दल बिखर गया था और उसके साथी सिपाही का भी दाहिना बाजू बारूदी सुरंग के विस्फोट में उड़ गया था। उस स्थिति में भी उसने न केवल माओवादियों के एक बहुत बड़े दल को रोके रखा बल्कि अपने घायल साथियों की भी मदद की।



शूरवीर प्रकाश

एक शौर्य चक्र और छः पुलिस वीरता पदकों से सम्मानित देश के सर्वाधिक अलंकृत पुलिस अधिकारी प्रकाश रंजन मिश्र के हैरत अंगेज कारनामों से भरपूर एक चित्रकथा। जानिए कैसे एक वीर अधिकारी ने एक गोली जांघ में, चार गोलियां दाहिने कंधे के नीचे सीने में और एक गोली कान को छील कर निकल जाने के बावजूद, माओवादियों के विरुद्ध एक बड़े अभियान को सफलतापूर्वक अंजाम दिया।



जाँबाज इलंगो

छत्तिसगढ़ के बीजापुर में माओवादियों पर काल बन कर टूट पड़े तमिलनाडू के एक साधारण ग्रामीण परिवार से आए श्री एस. इलंगो की शौर्य गाथा जिन्हें तीन वीरता पुलिस पदकों से सम्मानित किया गया। केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल के पुलिस उप-महानिरीक्षक श्री एस. इलंगो देश के उन दिलेर अधिकारियों में गिने जाते हैं जिन्होंने अपने साहस व सूझबूझ से देश में आतंकवादियों, माओवादियों और देशद्रोहियों के विरुद्ध कई बड़े अभियानों को सफलतापूर्वक अंजाम दिया है।



अयोध्या के शूरवीर

5 जुलाई, 2005 स्वचालित रायफल, हथगोलों और रॉकेट लांचर्स से लैस आतंकवादियों को अयोध्या स्थित विवादित स्थल को ध्वस्त करने से रोकना किसी भी सुरक्षा बल के लिए एक दुष्कर कार्य हो सकता था, लेकिन उन आतंकवादियों और विवादित स्थल में मौजूद दर्शनार्थियों के बीच एक अभेद्य सुरक्षा दीवार बन कर खड़े हो गए केंद्रीय रिजर्व पुलिस बल (सी.आर.पी.एफ.) की 33वीं बटालियन के 'डी' कंपनी के जवान, जिन्होंने न केवल उन सभी आतंकवादियों को मार गिराया बल्कि यह भी सुनिश्चित किया कि विवादित स्थल और दर्शनार्थियों को लेश मात्र भी क्षति न पहुंचे!